एम. ए. हिंदी

कार्यक्रम का परिणाम

पाठ्यचर्या योजना सीखने के परिणाम पर आधारित दृष्टिकोण

इस पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थी के विवेक को विस्तार देते हुए गहन अध्ययन तथा शोध की उत्कंठा विकसित करना है | ज्ञान की शाखाओं के साथ – साथ आज विश्व को सजग, आलोचनात्मक, विवेकशील और संवेदनशील व्यक्तित्व की आवश्यकता है | जो समाज की नकारात्मक शक्तियों के विरुद्ध समानता और बंधुत्व के भाव की स्थापना कर सकें | साहित्य का अध्ययन मनुष्य को इस संदर्भ में विस्तार देता है, तथा मानवता की विजय में उसके विश्वास को दृढ़ करता है | भाषा, आलोचना, काव्य शास्त्र का अध्ययन जहाँ सैद्धांतिक समझ को विस्तृत करता है, वहीं कविता, नाटक, कहानी में उन सिद्धांतों को व्यावहारिक रूप से समझने की युक्तियाँ छिपी रहती है | इस प्रकार एम. ए. हिंदी का पाठ्यक्रम विद्यार्थी को सैद्धांतिक और व्यवहारिक दोनों रूपों में सक्षम बनाता है | साथ ही पाठ्यक्रम की संरचना इस बात की आजादी भी देती है कि वह मुक्त ऐच्छिक पाठ्यक्रम में अपनी इच्छा से विभिन्न विषयों को पढ़ सके |

एम. ए. हिंदी कार्यक्रम के लक्ष्य

हिंदी पढ़ने वाले छात्रों को भाषा की क्षमता से परिचित कराना बहुत ही जरूरी है | इसी के साथ ही उसे समाज की चुनौतियों के संदर्भ से जुड़ने की क्षमता विकसित करना भी इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य है | आज हम सब भूमंडलीकृत समाज का अंग है, अतः पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थी को देश विदेश के साहित्य में हो रहे बदलाव से परिचित कराना भी है | इसी के साथ व्यावसायिक योग्यता विकसित करना भी इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य है यह पाठ्यक्रम बाजारवाद और भूमंडलीकरण की वैश्विक गति के बीच से ही हिंदी की राष्ट्रीय प्रगति को भी सुनिश्चित करेगा | क्योंकि सशक्त भाषा के बिना किसी राष्ट्र की उन्नति संभव नहीं है | यह पाठ्यक्रम वर्तमान सन्दर्भो के अनुकूल है | इस पाठ्यक्रम का आधुनिक रूप रोजगारपरक है | यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को व्यावहारिक पहलू से अवगत करा सकेगा | हिंदी साहित्य की नई समझ और भाषा की व्यावहारिकता की जानकारी इसका प्रमुख उद्देश्य है इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य भाषा और समाज के जटिल संबंधों की पहचान कराना भी है | जिससे विद्यार्थी देश समाज राष्ट्र और विश्व के साथ बदलते समय में व्यापक सरोकारों से अपना संबंध जोड़ सकें , साथ ही उसके भाषा कौशल, लेखन और संप्रेषण क्षमता का विकास हो सके |

अनुशासनात्मक ज्ञान

भाषा साहित्य और संस्कृति के अध्ययन विश्लेषण द्वारा इतिहास समाज विज्ञान मनोविज्ञान दर्शन भाषाविज्ञान आदि विषयों का तुलनात्मक ज्ञान प्राप्त हो सकेगा | इसके द्वारा साहित्य और भाषा के बहुआयामी अध्ययन से संवाद एवं लेखन की क्षमता विकसित होगी |

आलोचनात्मक विवेक

इसके अध्ययन से आलोचनात्मक विवेक का विकास होगा और अंतर अनुशासनात्मक ए वन तुलनात्मक अध्ययन करने से आलोचनात्मक विवेक विकसित होगा |

चिंतनशील सोच

साहित्य और भाषा का अध्ययन करने से व्यक्तित्व का विकास तो होता ही है इसके साथ ही समाज और आत्मा के अंतरसंबंध को समझने की विशेष योग्यता छात्रों में विकसित होती है |

नैतिक और मूल्यगत जागरूकता

साहित्य के अध्ययन से व्यक्ति में नैतिक और मूल्यगत जागरूकता आती है साहित्य प्रत्यक्ष रूप से नैतिक मूल्यों के विकास का अवसर प्रदान करता है |

बहुसांस्कृतिक क्षमता

साहित्य और भाषा का अध्ययन बहुसांस्कृतिक अनुभव प्रदान करता है तथा यह हमें इस योग्य बनाता है कि हम विभिन्न सांस्कृतिक परिवेश को आत्मसात कर सके |

पाठ्यक्रम सीखने के विशिष्ट परिणाम

इस पाठ्यक्रम को पढ़ने - पढ़ाने से निम्नलिखित परिणाम सामने आएँगे –

- इस पाठ्यक्रम के माध्यम से सीखने सिखाने की प्रक्रिया में, हिंदी भाषा के आरंभिक स्तर से अब तक के बदलते रूपों की विस्तृत जानकारी प्राप्त की जा सकेगी |
- भाषा के सैद्धांतिक रूप साथ साथ व्यावहारिक पक्ष को भी जाना जा सकेगा |
- उच्च शैक्षिक स्तर पर हिंदी भाषा किस प्रकार महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है | इससे संबंधित परिणाम को प्राप्त किया जा सकेगा |
- छात्र अपनी भाषा को सीखने की प्रक्रिया में भाषागत मूल्यों को व्यावहारिक रूप से जान सकेंगे |
- व्यावसायिक क्षमता को बढ़ावा देने के लिए भाषा, अनुवाद, कंप्यूटर और सिनेमा जैसे विषयों को हिंदी से जोड़कर पढ़ाना | जिससे बाजार के लिए आवश्यक योग्यता का भी विकास किया जा सके |
- हिंदी के अतिरिक्त भारतीय साहित्य का ज्ञान भी अपेक्षित रहेगा , जो छात्रों के व्यक्तित्व विकास में सहायक होगा तथा अभिव्यक्ति की क्षमता का विकास भी किया जा सकेगा |
- साहित्य के माध्यम से सौंदर्यबोध, नैतिकता, पर्यावरण और सामाजिक समरसता संबंधी विषयों की समझ विकसित होगी |
- साहित्य के विधाओं के माध्यम से विद्यार्थी की रचनात्मकता को दिशा देना | कविता, कहानी, और नाटक जैसी विधाओं द्वारा विद्यार्थी की रचनात्मकता को प्रोत्साहित करना |
- साहित्य के आदिकालीन संदर्भों से लेकर समकालीन रूप से परिचित कराना, जिससे विद्यार्थी साहित्यकार और युगबोध के संबंध को परख और पहचान सकें |

- साहित्य विवेक का निर्माण करते हुए सूचना - प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हिंदी के दखल की जानकारी रखकर मीडिया के प्रति आलोचनात्मक विवेक का निर्माण करना |
- प्राचीन और नवीन, भारतीय एवं पाश्चात्य सौंदर्य सिद्धांतों तथा काव्यशास्त्रीय प्रतिमानों का अध्ययन विश्लेषण करने की क्षमता विकसित होगी |